Page No.:
Date:

HISTORY (H)

B.A. – III PART-'B'

PAPER – Ist

HISTORY OF INDIA (1550–1750)

UNIT – 3.

⇒ Agrarian Structure

कृषिगत संरचना (मुगल काल)

⇒ नहरें :-

सिंचाई के उद्देश्य से 16वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में भारत में नहरों की कृत्रिम अवस्था का अभाव बताया गया है। भारत के उत्तरी में खास विशेषकर गंगा एवं सिंधु क्षेत्र में सिंचाई हेतु अनेक नहरें निर्मित की गई। नहरें दो प्रकार की होती थी- प्राकृतिक व मानव निर्मित। नदियों द्वारा मार्ग बदलने के कारण नहरें का उद्भव हो जाता था। ऐसी नहरें मुख्य नदी शाखाओं में बंट कर प्रणालियों के रूप में बहती थी जिनका प्रयोग सिंचाई की जाती थी।

शाहजहाँ के काल में नहर-ए-फैज या नहर-ए-बहिश्त (स्वर्ग की नहर) 150 मील लंबी थी जो यमुना नदी के तराई क्षेत्र में प्रवेश करते ही अलग हो जाती थी और पहले दक्षिण-पश्चिम एवं दक्षिण पूर्व दिशा बदलते हुए दिल्ली के निकट अपनी मूल नदी में मिल जाती थी। एक अन्य नहर जो लंबाई में 100 मील से कम थी रावी नदी से निकलती थी तथा लाहौर के निकट पुनः उसी में मिल जाती थी। इसका निर्माण शाहजहाँ के आदेश पर अली मर्दान खाँ द्वारा कराया गया था। एक लाख रुपये के व्यय से निर्मित इस नहर में कृषि का अधिक विकास हुआ। शाहजहाँ के काल में पंजाब में रावी नदी से निकाली गई शाह नहर के अतिरिक्त तीन और छोटी नहरों का भी ब्यौरा मिलता है जिन्हें 17 वीं शताब्दी के स्थानीय इतिहासकारों ने कृषि की दृष्टिकोण से अत्यंत ही उपयोगी बतलाया है। साम्राज्य के अन्य भागों में भी कुछ नहरें सिंचाई हेतु प्रयोग में लाई जाती थी जो स्थानीय थी।

Scanned with CamScanner

⇒ तालाब, कृत्रिम बाँध एवं झीलें:

मुगल काल में कुँओं तथा नहरों के अलावा तालाब व झीलें भी सिंचाई के कृत्रिम साधन के रूप में प्रयोग किये जाते थे। प्रायः गाँवों में एकाधिक तालाब होते थे। मध्य भारत, दक्कन और दक्षिण भारत में तालाब सिंचाई कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। दक्षिण भारत के गोलकुण्डा साम्राज्य एवं हैदराबाद को अनेक तालाबों से युक्त बनाया गया था। ये तालाब एक प्रकार के कृत्रिम बाँध के रूप में स्थापित थे और इनका प्रयोग वर्षा काल के बाद सिंचाई के लिए किया जाता था।

विजयनगर साम्राज्य के 15वीं 16वीं शताब्दी के दौरान यहाँ निर्मित मदाक झील और तत्कालीन निर्माण प्रौद्योगिकी की बेहतर उदाहरण है। ऐतिहासिक तौर पर जिस प्रकार यूरोप के लिए कृषि क्षेत्र में खाद का महत्व था। भारतीय कृषि के लिए सिंचाई उतने ही निर्णायक रूप से महत्वपूर्ण थी। यही कारण था कि भारतीय इतिहास में सिंचाई के मुद्दे

में उपर्युक्त महत्वपूर्ण आविष्कारों एवं उपकरणों का विकास हुआ। विशेष रूप से सिंचाई सुविधाओं को उपलब्ध कराने के प्रयास में केन्द्र एवं राज्य दोनों के सरकार ने बड़ा योगदान दिया और इससे उल्लेखनीय तरक्की की और आर्थिक विकास संभव हो सका।

To be continue...

DR. UDAY KUMAR
DR. L. K. V. D. college Tajpur